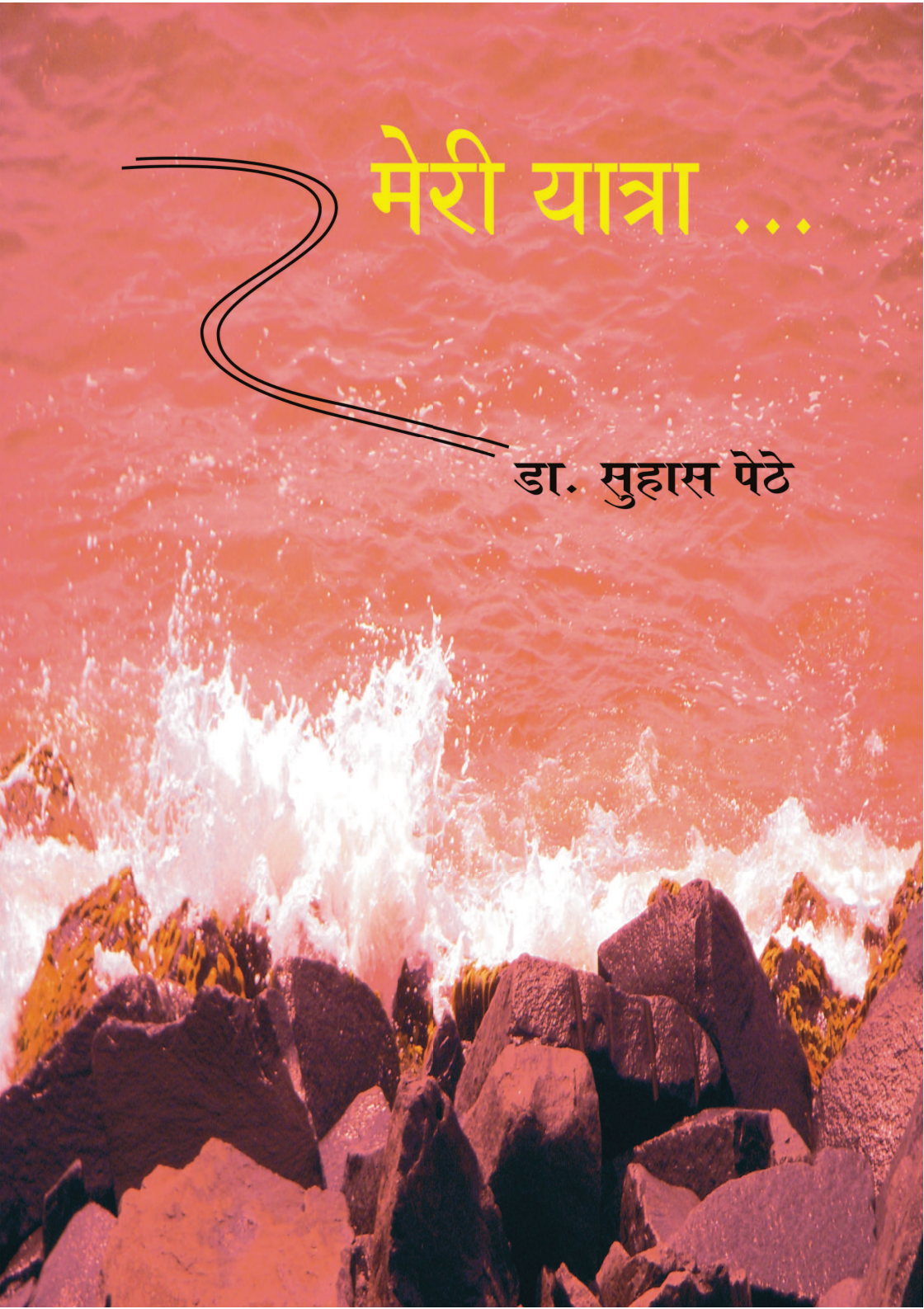
मेरी यात्रा ...

डा. सुहास पेठे



मेरी यात्रा ...

– डा. सुहास पेठे

* **मेरी यात्रा**

पुस्तकरूपाने प्रकाशित शेवटची आवृत्ती : सप्टेंबर २००९
डिजिटल आवृत्ती : डिसेंबर २०२१

© डॉ. सुहास पेठे , सातारा, महाराष्ट्र

डॉ. सुहास पेठे यांच्या अन्य साहित्यासाठी पहा :

वेबसाईट : www.pethekaka.com

युट्यूब चॅनेल : Shri Pethe Kaka

अँड्रॉईड ॲप : SadhanNandadeep (साधननंदादीप)

मेरी यात्रा

1.	लम्बा सफर ...	6
2.	उपहार ...	8
3.	साथ ...	10
4.	असीम कृपा ...	12
5.	कर्मव्यूह ...	14
6.	समस्या ...	16
7.	विश्वास ...	18
8.	मार्ग ...	19
9.	संदेश ...	21
10.	'अ'नाम ...	23
11.	प्रार्थना ...	24
12.	मेरी यात्रा ...	26
13.	गुलाम ...	29

1.

लम्बा सफर ...

अब जाकर समझ में आता है कि
आपकी ओर आने में
इतनी बाधाएँ क्यों खड़ी हैं ?

विश्वविजय के ढंग से
बाहरी बाधाओं का तो
कुछ हल हो सकता है
पर
आंतरिक और मेरी डाली हुई ?

बाधाओं को न पहचानने से –
दूर करने के कर्तव्य को न निभाने तक,
मैं तो स्वयं ही खड़ा हूँ, बाधा बनकर
आपकी ओर ले चलनेवाले सीधे रास्ते में !

मैं
जो अपने ही कर्मों के परिणामों की तीव्र धूप में
जलते हुए उससे छुटकारा पाने के लिए
की गयी आपकी यादों को –
आर्त्त भक्ति मानता हूँ,

मेरी मानवीय इच्छाओं को
ईश्वरी प्रेरणा समझता हूँ,

आपको मेरा ध्येय न मानकर
मेरे ध्येय में आपको देखता हूँ !!

फिर सफर और भी लम्बा
हो जाता है !

*

2.

उपहार ...

जब कभी सजग हुआ
आपके अगणित एहसानों के प्रति –

तब से
प्रतीक्षा करता रहा आपसे भेंट की –
भेंट के समय
उपहारस्वरूप कुछ देने के लिए
जुटाता रहा बहुत दिनों से ।

मैनें चुने थे उपहार बहुत से –
आपके दर्शन के लिए की यात्राएँ,
पूजापाठ, पारायण, छोटे–बड़े सत्कर्म !

जब मिलना हुआ
तो पूरी भरी हुअी उपहारों की पेटी
आपके आगे रखते हुए
मेरी आँखें चमक रही थीं !

मिलते ही पूछा आपने
'क्या लाया है कुछ मेरी पसन्द का ?'

'मेरी पसन्द' के उपहार वहीं रह गए !
तब से कानों में गूँज रहे हैं ये शब्द !!
बार बार सोचता हूँ ,
अब जीवन में, कि
क्या कुछ कर रहा हूँ
'आपकी पसन्द' का ?

*

3.

साथ ...

जब मैं घने जंगलों में भटक रहा था,
उमड़ती हुई भीड़ में मशगूल था,
तब भी आप साथ में मौजूद थे ।

जबसे मैं इन चार दीवारों में रह रहा हूँ,
चन्द लोगों में बस गया हूँ
तो भी आप साथ में मौजूद हैं ।

अब तो न लोग, न शब्द, न ध्वनि
फिर भी मेरे मौन में भी आप
साथ में मौजूद हैं ।

साफ है कि
आप इससे आगेवाली
किसी भी स्थितिगति में
मेरे साथ मौजूद ही रहेंगे !

आप का साथ
अनादि और अनन्त है !

*

4.

असीम कृपा ...

अनगिनत वेदनाएँ ,
संकटों की शृंखलाएँ –
सभी से घिर कर भी
मैं जिन्दा हूँ !

चूँकि
हर मोड़ पर
आपकी याद दिलानेवाली ये पीड़ाएँ –
आपकी भेजी हुई
असीम कृपा के दूत हैं ,
आपका स्मरण तीव्रतर करनेवाले मीत हैं

इसलिए
हे परमात्मन् ,
इन सभी के बावजूद भी
मैं जिन्दा हूँ ,
जिन्दादिल हूँ ,
खुशदिल हूँ !

आपकी असीम कृपा से !

*

5.

कर्मव्यूह ...

न जाने कब से यह कर्मों का
सिलसिला शुरू हुआ है,
जो कई मोडों से गुजरता हुआ
आज भी मुझको अपने में
समेटे हुए है !

इस कर्मव्यूह में
आपकी दिशा तो
कब की गुम हुई है,
इस व्यूह से निकलने के
आपके दिये हुए
कई अवसर भी
बीत चुके हैं !

अब
अर्जुन की बात तो दूर ,
कर्मव्यूह के भेद में
अभिमन्यु होना भी मुश्किल है !

इसलिए
अब मैं कृष्णशरण हूँ !!

एक बिनती के साथ कि
यह शरणागति
मेरे लिए
कोई नये कर्म का रूप न लें !!!

*

6.

समस्या ...

हे भगवन् ,
आपके चेहरे पर समस्या देखकर
मुझे अचरज हुआ –

वैसे तो मुझे
अपनी समस्याओं से
कभी फुरसत भी नहीं मिलती थी कि
आपसे मिलकर कभी पूछ लें
कि क्या आपकी भी कोई समस्या है ?

एक बार परेशान होकर ही
आपके पास आया था समाधान के लिए
तब भी आपने कभी जिक्र तक नहीं किया
आपकी समस्या का –
मेरी समस्या सुलझाते हुए !

समस्या का समाधान पाकर निकलते हुए
मुझे कुछ अचरज सा हुआ –

आपको चिंतित देखकर
एक क्षणार्द्ध में
आपके चेहरे को देखकर
मेरे मन में विचार कौंध आया कि
शायद
एक ही समस्या आपके चेहरे पर
प्रतिबिंबित थी कि ,
आपके साथ में होते हुए भी मुझे
समस्याएँ कैसी हो सकती हैं ?

आपकी इस मूक समस्या को
सुलझाने की बारी ,
हे भगवन् ,
अब मेरी है !

*

7.

विश्वास ...

कितना कठिन कर दिया है
मैंने
आपका व्यक्त होना मुझमें
इतने कूड़े करकट को भर कर

अब तो
इस कूड़े को निकालने की
मेरी जीवनभर की उम्मीद भी
हार गयी है –

अत: अब तो आपकी करुणा में ही विश्वास है

'जिस करुणा' को –
किसी की भी
पुकार सुनने पर ,
किसी भी स्थिति में,
किसी में भी
व्यक्त होना संभव है !

*

8.

मार्ग ...

कितना आसान और अच्छा लगता है
'आपकी प्रतिमा' को प्रणाम करना, फूल चढ़ाना –

कई बेहतर और आसान
'आपके मार्ग' पर चलने से !

निष्कामता, नि:स्वार्थता
कर्तव्यपरायणता आदि
कितने जटिल मार्ग
आपकी ओर ले चलनेवाले –

इन कष्टों से
हम तो पूरे बच जाते हैं
इस प्रणाम, फूल से !

यूँ तो बस
एक चीज है कि

'प्रणामवाला' प्रतिमा के आगे
आजीवन वहीं रह जाता है !

और सुना है
'मार्गवाला' आपतक पहुँच जाता है !!

*

9.

संदेश ...

'मेरे नाम'
कितने दिन से
खुले पडे हैं
आपके संदेश
इस सृष्टि में –

न जाने कितने दिन गए
उनको अनदेखे –

हरेभरे पेड़पौधे,
सूखी डालियाँ और पन्ने,
बहता पानी, स्थिर तालाब

गहराइयों का साथ देनेवाले
नभस्पर्शी पहाड़,
अमिट सा अँधेरा और सूर्य के सूक्त !

न देखने से तो पहले से ही क्षति पहुँची है ।
जब देखे तब मुश्किल यह थी कि
पढ़ने के लिए
उनकी भाषा नहीं समझती थी !

क्षति तो और भी बढ़ गयी है
क्यों कि
जब सन्देश पढ़ना आ गया है
तो अब लगता है कि

संदेश 'लोगों के नाम' हैं !

*

10.

'अ'नाम...

सुना है –
संसार मानता है कि
आपका 'नाम' लेनेवाला
भीड़ की नजरों में
कुछ 'बदनाम' हो जाता है

पर
अनुभव तो है कि
प्रभुनाम लेनेवाले को
'बदनामी' की तो फिक्र ही नहीं
वह तो
'अनाम' हो जाता है !

*

11.

प्रार्थना ...

प्रार्थना तो बार बार करता आया हूँ
मगर
मैं पाता हूँ कि
दरअसल
हर प्रार्थना के पीछे
मुझे मेरीही चिन्ता है
न कि
तुम्हारी योजना, इच्छा, करुणा या निर्णय की !

इस हालात में
अब
ठण्डे दिमाग से और तहेदिल से
एक ही प्रार्थना है कि

जब तक मेरी प्रार्थना
'मुझसे' ऊपर नहीं उठती
तब तक मेरी हर प्रार्थना को
अस्वीकार कर दो !

कृपा कर के !
अस्वीकार कर दो !!

*

12.

मेरी यात्रा ...

मुझे भेंट का वचन देकर
आँखों से ओझल होते हुए
आप इतने आगे निकल चुके थे
हे प्रभु,
कि
आपका पीछा करने की असफल कोशिश में
तन का कण कण थका हुआ,
मैं
रास्ते की मिट्टी में ही फिसल कर बैठ गया,
हारा हुआ –

तो कुछ ऐसा हुआ कि
संयोगवश मैंने पीछे देखा
तो आपही खड़े थे –
हल्की सी मुस्कान चेहरे पर लिए हुए
एक क्षण, मैं आपको मेरे पीछे देखते हुए
अवाक् सा !

मैंने आँखे बन्द कर लीं
अविश्वास के साथ –

तो फिर कुछ ऐसा हुआ कि
आपने फिर एक बार दर्शन दिए मुझे
मेरे ही अन्दर,

हृदय के अंतरतम में
अब पूरी तरह हँसते हुए !
और भी अविश्वास के साथ
मैंने आँखें खोलीं

फिर पाया कि
आगे न कोई राह थी,
न पीछे !

पाया कि
मेरी यात्रा तो
मुझमें ही
समाप्त हो गयी है !

*

13.

गुलाम...

मैं तो गुलाम गुरु का, गुरुपद का ! ।।धृ।।

देखे परखे अपने करतब
मनबुद्धि के मैंने जबजब
तब से गुरु की शरण गया हूँ
मार्ग चलें अब हित का...
हित का...।।१।।

मुझे न कोई इच्छा अपनी ।
अभी राह ना मंझिल अपनी ।
मुझसे गुरु करवाना चाहे ।
कर्म वही अब खुद का...
खुद का...।।२।।

करता हूँ निज कर्म पुराना ।
क्या बदला है कहीं ज़माना ।
बाहर से तो 'दीन' वही है ।
अन्दर कण कण गुरु का...
गुरु का...।।३।।

*

डॉ. सुहास पेठे यांच्या दर्जेदार व संग्राह्य साहित्याची सूची

(आता डिजिटल स्वरूपात)

१. **श्री ज्ञानेश्वरी : अध्याय नववा : समओवी** : श्री ज्ञानेश्वरी नवव्या अध्यायाची आजच्या सोप्या मराठीतील समओवी

२. **हरिपाठपराग :** श्री ज्ञानेश्वरांच्या हरिपाठातील काही जीवनसूत्रांचे सुबोध विवरण

३. **दर्शन :** आजच्या काळाचे अंतर्मुख करणारे दर्शन घडवणाऱ्या नव्या बोधकथा

४. **कर्तव्याची सश्रद्ध पाऊलवाट :** कर्तव्य निश्चितीसाठी सविस्तर मार्गदर्शन, शंकासमाधानासह

५. **साधनपदावली :** येथे अभ्यास,भजन व चिंतनासाठी घेतली जाणारी निवडक साधनपदे

६. **जपसंकल्प : स्वरूप व पद्धती :** जपाच्या संकल्पांसंबंधी प्रश्नोत्तररूपाने सुबोध, उपयुक्त माहिती

७. **अभंगसाधना :** श्री गोंदवलेकर महाराज यांच्या अभंगांचे साधनदृष्ट्या विवेचन

८. **जाग :** आनंदमय जीवनासाठी सोपी विचारसूत्रे

९. **जीवनजिज्ञासा** : जे. कृष्णमूर्तींच्या विचारांचा सुबोध परिचय

१०. **विचारविश्वाची ओळख :** आपल्या विचारांच्या विश्वाची सर्वांना उपयोगी ओळख

११. **चैतन्यचिंतन :**श्री ब्रह्मचैतन्य गोंदवलेकर महाराज यांच्या काही बोधवचनांचे सुगम विवरण

१२. **किमया** : प्रकाशमय जीवनासाठी सोपी विचारसूत्रे

१३. **प्रसादकण** : श्री तुकोबांचे नित्योपयोगी चोवीस अभंग व त्यांचे निरूपण

१४. **ठेवा** : उपनिषदांतल्या जीवनदृष्टीचे सुबोध व आगळे विवेचन

१५. **संतबोध : भाग १ :** विविध संतांच्या बोधवचनांची निरूपणे

१६. **संतबोध : भाग २** : विविध संतांच्या बोधवचनांची निरूपणे

१७. **संतबोध : भाग ३** : विविध संतांच्या बोधवचनांची निरूपणे

१८. **वृत्त्यंतरप्रकाश** : खऱ्या परमार्थाचा श्रीगणेशा करण्यासाठी मोलाची मदत

१९. **नाम** : नामाच्या जिज्ञासूंसाठी सोपी प्रातिनिधिक प्रश्नोत्तरे

२०. **श्री विष्णुसहस्रनाम : एक जीवनशैली** : सहस्रनामांतील निवडक नामांतून उलगडणारी जीवनशैली

२१. **चिंतनक्षण : भाग १ ते १२ (एकत्रित आवृत्ती)**
चिंतनास उपयुक्त अशी एकूण ३६६ बोधवचने

२२. **उपासनेची नोंदवही :** विविध व्यक्तिगत उपासना संकल्पांची पॉकेट साईज नोंदवही

२३. **उत्तरायण - भाग १ :** जिज्ञासू साधकांच्या विविध प्रश्नांना डॉ.पेठे यांनी दिलेली उत्तरे

२४. **शोध :** जिज्ञासू साधकांसाठी जे. कृष्णमूर्तींच्या काही विचारांचा सोपा अभ्यास

२५. **दिशा :** वास्तवावर विचार करण्याच्या काही उपयुक्त कथारूप दिशा

२६. **उत्तरायण - भाग २ :** जिज्ञासू साधकांच्या विविध प्रश्नांना डॉ.पेठे यांनी दिलेली उत्तरे

२७. **मुलांच्या गोष्टी पण सर्वांच्यासाठी :** मुलांसाठी उद्‌बोधक व रंजक गोष्टी - मोठ्यांनाही उपयोगी पडतील अशा

२८. **बासरी :** जीवनसंगीत सुरेल करण्यासाठी काही कथामय बोध

२९. **उपासना :** खऱ्या उपासनेची गरज, स्वरूप, शंका यांचा सोपा उलगडा

३०. **श्री ज्ञानेश्वरी : अध्याय बारावा : समओवी :** श्री ज्ञानेश्वरी बाराव्या अध्यायाची आजच्या सोप्या मराठीतील समओवी

३१. **कृपापदावली भाग : १ :** भजन, चिंतन, मनन यांसाठी निवडक अभंग, पदे, नव्या आरत्या, नव्या नमनमाला, नवे नित्यपाठ, श्लोक, प्रार्थना इत्यादी

३२. **कृपापदावली भाग : २ :** भजन, चिंतन, मनन यांसाठी निवडक अभंग, पदे, नव्या आरत्या, नव्या नमनमाला, नवे नित्यपाठ, श्लोक, प्रार्थना इत्यादी

३३. **साधनपदावली भाग १ :** भजन, चिंतन, मनन यांसाठी संतांचे निवडक अभंग, पदे भूमिकांसह

३४. **सारविस्तार भाग : १ :** चिंतनक्षण वचन क्र. एक ते आठ वरील ९ निरूपणे

३५. साधनप्रेरणा : नित्योपासनेसाठी संतछायेतील संतप्रतिमा व नमनमाला यांचे डेस्कटॉप कॅलेंडररूपाने दर्शन, गुरुपदपप्रतीक व आरत्यांसह

३६. मेरी यात्रा (हिंदी) : हिंदी कविताओं में निबद्ध साधन-यात्रा

३७. बोधपाठ : आधुनिक नित्यपाठ, २७ अभंग, विवरण, विश्वात्मकाच्या आरतीसह

३८. एकाध्यायी विचारगीता : (विवरणासह) : आदर्श मानवी जीवनासाठी आचरणीय विचारांचे मोजके सार

३९. सृष्टिसंदेश : (विवरणासह) : जीवनाला विधायक दिशा देणारे २७ अभंग सृष्टीच्या आरतीसह

४०. गुरुतत्त्वतरंगिणी : गुरुतत्त्वाच्या कार्याचे तीन अध्यायांत सुबोध श्लोकबद्ध विवरण

४१. श्री ज्ञानेश्वरी : अध्याय नववा : समओवी पारायणप्रत

४२. नाम (इंग्रजी आवृत्ती) : The Simplest Path For Spiritual Liberation

४३ ते ५४. चिंतनक्षण : भाग १ ते १२ (स्वतंत्र छोटी पुस्तके) :
डॉ. पेठे यांची चिंतनास उपयुक्त अशी बोधवचने

५५. शिदोरी : व्यक्तिगत, सामाजिक व पारमार्थिक हितासाठी विचारमंथन

५६. विचारविसावा : विसावा देणारी विचारांची विद्या

५७. सारविस्तार भाग २ : चिंतनक्षण वचन क्र. नऊ ते तेरा वरील ७ निरूपणे

५८. महाराजांची शाळा : श्री गोंदवलेकर महाराज यांच्या कल्याणकारी उपदेशाचं लहान थोर सर्वांना उपयोगी ठरू शकणारं सोपं विवरण

५९. साधनपदावली भाग २ : भजन, चिंतन, मनन यांसाठी संतांचे निवडक अभंग, पदे भूमिकांसह

६०. आरतीपुष्पमाला : डॉ. सुहास पेठे रचित विविध नवीन आरत्या

६१. विनवणीची वाणी : चौदा आर्त अभंग प्रास्ताविक व निवेदनांसह

६२. श्रद्धेची पहाट : खऱ्या सुखाचा वास्तवाधार कथारूप बोध..

६३. उपासनामाला : येथे केल्या जाणाऱ्या विविध उपासना

६४. पावनपथ : श्री कृष्णदास महाराजांचा जीवन पावन करणारा उपदेशमार्ग

६५. अनुभवपुष्पे - भाग १ : चिंतनासाठी काही अनुभव-वचने

६६. कृतज्ञतामार्ग : कृतज्ञता या गरजेच्या गुणाचं सार्वत्रिक महत्त्व, जन्मभर व मृत्यूनंतर आचरणासाठी कालोचित, सोप्या, सार्वत्रिक कृती, सर्वांना स्वतंत्रपणे सहभागी होता येण्यासारखे मराठी मंत्र

६७. ज्ञानेश्वरीच्या प्रकाशात : आजच्या जीवनासाठी ज्ञानेश्वरीची सोपी ओळख

६८. श्री ज्ञानेश्वरी अध्याय नववा : समओवी : (मोठ्या आकारातील विशेष आवृत्ती) श्री ज्ञानेश्वरी नवव्या अध्यायाची आजच्या सोप्या मराठीतील समओवी

६९. संतबोध : भाग ४ : विविध संतांच्या बोधवचनांची निरूपणे

७०. श्री रमणमहर्षीकृत उपदेशसार : मूळ श्लोक मराठी समश्लोकीसह

७१. उत्तरायण -भाग ३ : जिज्ञासू साधकांच्या विविध प्रश्नांना डॉ.पेठे यांनी दिलेली उत्तरे

७२. अनुभवपुष्पे - भाग २ : चिंतनासाठी काही अनुभव-वचने

७३. श्रद्धा : श्रद्धा या विषयावरची सोपी प्रातिनिधिक प्रश्नोत्तरे

७४. अनुभवपुष्पे - भाग ३ : चिंतनासाठी काही अनुभव-वचने

७५. अर्घ्य : ज्यांचे उपकार फिटत नाहीत, त्यांच्यासाठी समजून केलेल्या प्रातिनिधिक कृती, काही कथांच्या रूपानं

७६. जीवनचिंतन : दैनंदिन आयुष्यातल्या छोट्या गोष्टींतला मोठा बोध

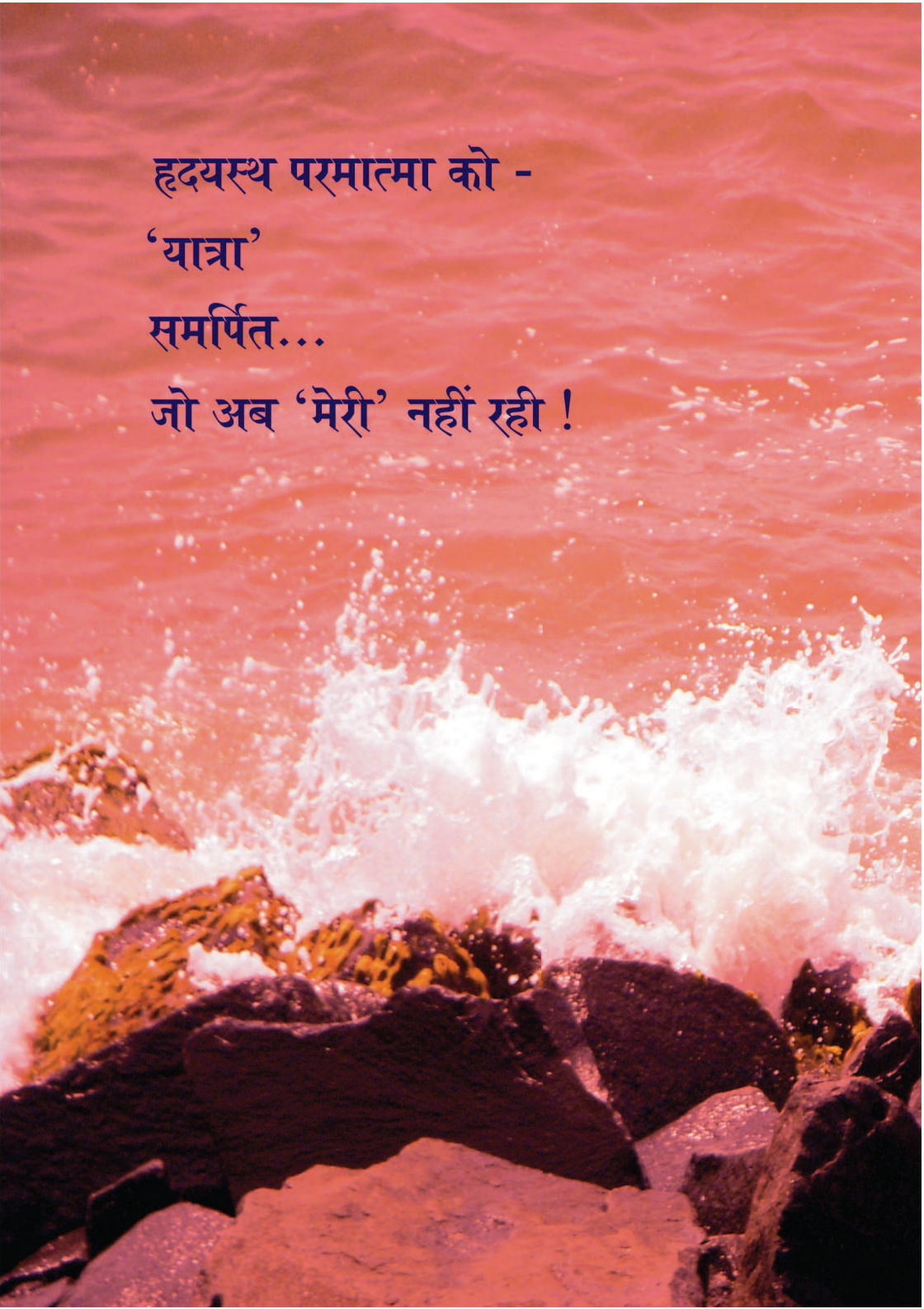
७७. स्वास्थ्यसंवाद : मनःस्वास्थ्यासाठी सर्वांना उपयुक्त, सोपा सुसंवाद

७८. वचनांजली भाग १ : श्री पेठेकाकांच्या प्रवचने, निरूपणे व साहित्यातील निवडक संपादित वचने

७९. अक्षरायण : आनंदप्राप्तीसाठी 'अक्षर' चिंतनसूत्रं

८०. वचनांजली भाग २ : श्री पेठेकाकांच्या प्रवचने, निरूपणे व साहित्यातील निवडक संपादित वचने

८१. भावगीता : श्रीमद्भगवद्गीतेचा मराठी समश्लोकी भावानुवाद



हृदयस्थ परमात्मा को -

'यात्रा'

समर्पित...

जो अब 'मेरी' नहीं रही !